शक्ति की भक्ति में डूबा शनिधाम

श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम, असोला, फतेहपुर बेरी, दिल्ली में नवरात्र के उपलक्ष्य में आयोजित मंत्र जाप शिविर में श्रद्धालु मां के भजनों को सुनकर ऐसे भाव विभोर हुए कि उनके पांव अपने आप ही थिरकने लगे। मंदिर परिसर में नवरात्र पर नौ देवियों व दस विद्याओं की आराधना का विशेष मंत्रोजाप अनुष्ठान आयोजित किया गया। अनुष्ठान में सैकड़ों दंपत्ति ने भाग लिया, जिन्होंने नौ दिन नौ देवियों व दस विद्याओं के विभिन्न रूपों का दिन के आधार पर मंत्रोजाप किया। श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम में मंत्रोच्चार और पूजन के लिए मां का बड़ा दरबार लगाया गया। एक सौ आठ अखंड ज्योति व अनवरत मंत्रोच्चार व जाप के साथ ही सैकड़ों लोगों के मुख से एक साथ मां की आराधना के उच्चारण से पूरा वातावरण शक्तिमय दिखता था।

श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम में मां भगवती का हुआ भव्य पूजन व सामूहिक अनुष्ठान

मंदिर में नौ रूपों में शक्तियों व दस विद्या देवियों की वृहद प्रतिमा के साथ ही दुल्हन की भांति पूरे दरबार को सजाया गया। हमारे हिंदू धर्म में अनेक देवताओं व देवियों की पूजन व आराधना के लिए हमेशा ही जगह-जगह पर अनुष्ठान व यज्ञ होते रहते हैं लेकिन शनिधाम में आयोजित नवरात्र जाप अनुष्ठान अपने आप में अनूठा है, जिसमें पति-पत्नी समान रूप से एक साथ मां की आराधना करते हैं। नौ दुर्गा व दस विद्याओं के पूजन के इन नौ शक्तिदिनों के आयोजन की तैयारी महीनों पूर्व से शुरू हो जाती है। इस विशेष मंत्रजाप में सम्मिलित होने के लिए महीनों से लोग संपर्क में रहते हैं। सब प्रवेश फार्म भरते हैं, उनकी छंटनी की जाती है तथा उनके नामों पर अंतिम संस्तुति शनिधाम के पीठाधीश्वर श्रीश्री1008 महामंडलेश्वर परमहंस दाती जी महाराज की होती है। इसके बाद ही इस आयोजन में सम्मिलित होने का शुभ अवसर मिलता है। कई लोग निराश होते हैं तो कइयों की मनोकामना पूरी होती है लेकिन उनमें जिनका नाम पहले नवरात्र में ही स्वीकार लिया जाता है तो खुद को भाग्यशाली मानते हैं। इस जाप अनुष्ठान में सम्मिलित होने के लिए फार्म व्यवस्था और छंटनी के विषय में दाती महाराज का कहना है कि हम किसी को निराश नहीं करना चाहते हैं लेकिन ऐसी व्यवस्था लागू करने से जो वास्तव में निश्छल भाव से पूर्ण श्रद्धा के साथ मां की आराधना करना चाहते हैं, वहीं इसमें सम्मिलित होते हैं। अगर ऐसी व्यवस्था न की जाए तो लोग देखी-देखा ही इसमें सम्मिलित होते हैं जिनका आध्यात्म और पूजन से कोई लगाव नहीं होता है। ऐसे लोगों के सम्मिलित होने से जाप में व्यवधान ही आता है इसलिए कड़े प्रावधान किए गए हैं।

नवरात्र मां की आराधना का वह विशेष पावन पर्व है, जिसमें शक्तिस्वरूपा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना की जाती है। मान्यता है कि पूर्व में राक्षसों के अत्याचार और उनके अनाचार से फैले आतंक को मिटाने के लिए मां शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ था। मां ने विभिन्न स्वरूपों में मधु-कैटभ, धूम्र विलोचन, शुंभ-निशुंभ, रक्तबीज तथा महिषासुर सहित हजारों राक्षसों की कोटि-कोटि सेनाओं का दमन किया था। देवी सूक्ति में कहा गया है कि जो व्यक्ति इच्छा व श्रद्धानुसार नवरात्र में मां आराधना व पूजन करेगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।